PARIVARTAN परिवर्तन TAKSHILA तक्षशिला

# हमार अँगना

अंक 16 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अप्रैल - अक्टूबर 2024

## संपादकीय

प्रिय पाठको,

जैसा कि आप जानते है बालघर आंगन परिवर्तन शिक्षा की एक उप इकाई है। जो पिछले 10 वर्षो से लगातार आंगनबाड़ी केंद्रों के 3 से 6 वर्ष के बच्चों के साथ जुड़ी है। इस प्रयास के अंतर्गत बालघर आंगन 21 गाँवों के 52 आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ जुड़कर काम कर रही है। बालघर आंगन का उद्देश्य बच्चो के अन्दर खेल, कविता, कहानी के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान कराना है, और कार्यक्षेत्र के आंगनबाड़ी केन्द्रों को सुदृढ करने हेतु सभी सेविकाओं, सहायिकाओं का मार्गदर्शन करना है। आंगनबाड़ी केंद्र द्वारा संचालित की गई गतिविधियाँ एवं कार्यक्रमों - अन्नप्राशन, गोदभराई, पोषाहार, दैनिक शैक्षणिक गतिविधी कार्यक्रमों में बालघर आंगन का हस्तक्षेप सीधे तौर पर सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों के साथ हो रहा है। इस अंक के माध्यम से मै बालघर आंगन के हस्तक्षेप से उत्पन्न प्रभाव, नई पहल तथा केन्द्रों के साथ सहयोग का पिछले छः माह का अनुभव आप सभी के साथ साझा कर रही हूँ।

पिछले सत्र में अपने कोर एरिया के सात पंचायतों के साथ स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम एवं कुछ प्रमुख कार्यशालायें- नन्हे कदम कार्यशाला, गुनगुन कार्यशाला तथा गतिविधि शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें सेविकाओं, सहायिकाओं, बच्चोंऔर अभिभावकों ने बहुत ही सुंदर तरीके से जुड़ कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

सप्रेम

**मधुबाला**

## हमारी कार्यप्रणाली

बालघर आँगन अपने आस-पास के 21 गाँवों के 52 आँगनबाड़ी केन्द्रों के साथ कार्यरत है। हमारा काम 3 से 6 वर्ष के बच्चों के अन्दर मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास को प्रबल करना है। मानव जीवन में यह उम्र ऐसी उम्र होती है जिसे गीली मिट्टी भी कहा जाता है। यह एक ऐसी आयु सीमा है जिसमे बच्चों का सर्वाधिक बौद्धिक विकास होता है, हम भी इसी बात का ध्यान रखते हुए बच्चों के विकास के लिए खेल-खेल के माध्यम से उन्हें भविष्य में सफल नागरिक बनाने हेतु तैयार करते हैं ताकि ये बच्चे यहाँ से जाकर अपने केंद्र पर आदर्श बच्चे बनकर उभरें और अन्य बच्चों को प्रेरित कर सकें। क्लास के लिए हमारी 6 माह की एक कार्य योजना है। इस कार्य योजना को बनाने के लिए, प्रथम संस्था, इकतारा संस्था, प्रार्थना एवं अश्वत की किताबों तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल पटना की शिक्षिकाओं एवं परिवर्तन के साथियों का धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिनके सहयोग के बिना यह कार्य योजना सफल नही हो पाती। हमारे पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से तरह-तरह की आवाजों से अक्षर (फौनिटिक साउंड) की पहचान, अपने परिवार की जानकारी, देश भक्ति कविता, मन पसंद के खाने, तरह-तरह के पोषक तत्व की जानकारी को शामिल किया गया है। जिससे बच्चे इन आवश्यक बातो को खेल-खेल के माध्यम से समझ सकें।

दिनांक 19/04/2024 दिन शुक्रवार को नरेन्द्रपुर उमरावती जी के सेंटर पर अन्नप्राशन दिवस का आयोजन किया गया और बहुत ही धूम- धाम से मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान I.C.D.S से सुपरवाइजर चिंता मैडम भी शामिल थी। अन्नप्राशन दिवस मनाने के बाद कार्यक्रम स्थल पर ( 25 मई को अपना मतदान करें।) मतदान को लेकर भी आंगनबाड़ी सेंटर पर सत्र लिया गया।कुल प्रतिभागी 22 रहे।

## हमार अंगना का विमोचन-अंक 15

दिनांक 07/05/24 दिन मंगल को मियांभटकन, रमिता जी के सेंटर पर गोदभराई हुई और हमार आंगन पत्रिका का विमोचन किया गया; जिसमें-प्रार्थना, व्यायाम, बालगीत, कहानी का स्वस्वर वाचन हुआ तथा मिथलेश जी द्वारा संतुलित आहार के बारे में बताया गया। राजवर्द्धन जी के द्वारा केंद्र की सजावट की गयी। जिसके बाद रंगमडली के सहयोग से वहाँ पर गाने के माध्यम से बहुत ही सुंदर माहौल तैयार किया गया और आलोक जी "हमार आंगन" पत्रिका के बारे में विस्तार से बताये। साथ ही साथ चिंता जी द्वारा यह बताया गया कि हम लोग क्यो इकट्ठा हुए हैं? सरकार ने हर माह की सात तारीख को आंगनबाड़ी सेंटर पर गोदभराई दिवस मनाने का निर्देश दिया है। जिससे गर्भवती महिला को अपने खान -पान में संतुलित आहार का सेवन क्यों और कैसे करना है इसकी जानकारी मिले और जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ रहें। कार्यक्रम में कुल 28 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

## नन्हें कदम कार्यशाला की रिपोर्ट 2024

**दिनांक : 28 सितम्बर (2024),**
**समय :10:30-12:30 am,**
**स्थान : आंगनबाड़ी सेंटर (गोंठी)**

**उद्देश्य :** इस कार्यशाला का उद्देश्य है कि जिन आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चे परिवर्तन में आते हैं और गतिविधि सीखते हैं उसे वे नन्हे कदम कार्यशाला के माध्यम से अभिभावकों के बीच प्रस्तुत करें ताकि उन बच्चों के अभिभावकों के बीच यह समझ बने कि परिवर्तन आने से बच्चे में क्या और कितना सकारात्मक बदलाव आया है। आंगनबाड़ी सेंटर पहुचंने के बाद वहां पर कार्यक्रम को शुरू किया गया।

**प्रार्थना**-तुम्ही हो माता - पिता तुम्ही हो।इस प्रार्थना को बच्चों और अभिवावकों के बीच गाया गया। जिसमें बचों और अभिवावकों ने बहुत ही सुंदर तरीके से साथ में स्वरवाचन किया।

**व्यायाम –** बच्चों द्वारा व्यायाम और बालगीत की प्रस्तुती की गयी।जिसमें व्यायाम के माध्यम से दस तक की गिनती तथा दिशा का निर्देश करवाया गया। उसके बाद बालगीत का स्वरवाचन किया गया।

**विज्ञान की दुनिया –**सुधीर जी द्वारा बच्चों को अरविन्द गुप्ता के बहुत सारे खिलौना दिखाए गए। इस तरह की गतिविधि में बच्चे और अभिभावक काफी रूचि ले रहे थे।इन खिलौनों में टब में नाव चलाना, स्ट्रॉ से सिटी का निर्माण, माचिस के डब्बे से ट्रेन का चलाना और बोतल गुब्बारा से पंप का निर्माण कर दिखाया गया।

**रंगों की दुनिया -**राजवर्धन जी द्वारा बच्चों के साथ अलग-अलग जानवरों के मुखौटे बनाए गए। जब बहुत सारे मुखौटे बनकर तैयार हो गए तब उन्ही मुखौटों को बच्चों ने पहनकर अपना-अपना रोल निभाया। जिसमें हर बच्चे ने अपने मन पसंद के जानवर को राजवर्धन जी के सहयोग से बनाया। इस गतिविधि को बच्चों ने खेल - खेल के माध्यम से पूरा किया।

| सेविका | सहायिका | बच्चे | अभिभावक |
|---|---|---|---|
| 01 | 03 | 45 | 18 |

## रंग-रंगीली

मुझे रंग काफी प्रभावित करते हैं। मैं जब भी रंग देखता हूँ तो मैं काफी उत्साहित हो उठता हूँ। उन रंगों के साथ खेलने के लिए। ठीक यही हाल मेरा बच्चों को देखकर होता है, क्योकि बच्चे भी रंग की तरह निश्छल होते है जो बिना किसी छल-कपट या अन्य भेदभाव किये हर किसी पर अपनी छाप छोड़ जाते हैं।

मुझे बालघर आँगन से जुड़े बच्चों के साथ हर महीने कला से जुड़ी गतिविधि करने का मौका मिलता है। जिसमें मैं बहुत ही छोटे-छोटे बच्चों के साथ ढेर सारी बातें करता हूँ, उनकी तोतली बोली को समझने का प्रयास करता हूँ, उनकी छोटी-छोटी हरकतों से उन्हें महसूस करने का प्रयास करता हूँ। मैं जब भी बालघर क्लास के लिए परिवर्तन बालघर में जाता हूँ तो क्लास में प्रवेश करने से पहले ही काफी रोमांचित हो उठता हूँ जब मैं 3 साल के बच्चों को कतारबद्ध होकर प्रार्थना करता देखता हूँ। कोई बच्चा अपनी दोनों आँखें बंद कर बड़ी ही निष्ठा के साथ प्रार्थना करता है तो कोई अपनी एक आँख आधा खोल मधुबाला जी द्वारा कराये जा रहे एक्शन को दोहराता है।

मैं एक दिन "तरह तरह के रंग लेकर इन नन्हे चित्रकारों के पास पहुंचा। सभी बच्चे मुझे देखते ही बड़ी उत्सुकता के साथ "राज सर, राज सर" कर मुझे घेरने लगे। मैंने बच्चों को एक गोले में बैठाकर अपने विषय आधारित गतिविधि को शुरू किया। सबसे पहले मैंने बच्चों से ढेर सारी कविता सुनी। मैं बच्चों को आज क्लास की चार दिवारी से बाहर ले जाकर क्लास कराने वाला था। बच्चे वैसे आमतौर पर कृषि कार्य गतिविधि के लिए क्लास से बाहर खेत में जाया करते हैं पर चित्रकारी के लिए पहली बार ऐसा होना था। यह सोच सभी बच्चे काफी उत्साहित थे। सभी क़तार में रेल गाड़ी बनते और रेल गाड़ी की कविता गुनगुनाते पहुंचे पेड़ो के पास, क्योकि आजका हमारा यह सेशन पेड़ के पास ही होना था। सभी बच्चों को एक एक पेड़ चुनना था फिर पेड़ की तना पर पेपर रखकर रंग की सहायता से उसका छाप अपने पेपर पर लेना था। सभी बच्चे काम में जुट गए। कितने बच्चों ने तो कितनी बार पेपर ही फाड़ डाले पर हिम्मत नहीं हारी और बनाने का प्रयास करते रहे। बच्चों को इस तरह पेड़ से

चिपकता देख मुझे बचपन में पढ़े चिपको आन्दोलन की याद आ गयी। सारे बच्चे काफी मजे से रंगों को रगड़ रहे थे और छाप उकेरते ही मेरे पास दौड़े आते –"सर देखिये मेरा पेड़ बन गया।" उनकी सफलता की ख़ुशी उनके चेहरे पर साफ झलकती थी। उसी में एक लड़का था "रौनक" वह कितना भी काम कर ले उसका मन ही नहीं भरता था। सब बच्चों का काम खत्म हो गया पर वह अपने कामों में जुटा ही था। अंत में बारिश आ गयी फिर भी वह जाना नहीं चाहता था और पूरी तन्मयता से छाप लेने में लगा हुआ था। उसका यह समर्पण देख मुझे भविष्य का चित्रकार उसमें नजर आ रहा था। क्लास ख़त्म होते होते इस क्लास ने एक मस्ती की क्लास का रूप ले लिया था। सभी बच्चों ने काफी उत्सुकता के साथ इस क्लास में भाग लिया और अपनी-अपनी कलाकृति प्रस्तुत की।

वास्तव में बच्चों के साथ काम करना, खास कर छोटे बच्चों के साथ, हमें एक नया अनुभव देता है, हमें बहुत नया कुछ सिखाता है।

- राजवर्द्धन, कलाप्रशिक्षक – परिवर्तन

## सेविका प्रशिक्षण- रिपोर्ट 2024 (अक्टूबर माह )

**दिनांक - 17-18 अक्टूबर 2024, स्थान- सभागार,बिल्डिंग -3 (परिवर्तन), समय - 12:30PM से - 5:00PM**

**प्रशिक्षक :** आलिया अहमद, स्वाति सागर, काजल पल्लवी, प्रशमा मारिया लोबो

**उद्देश्य:**इस कार्यशाला का उद्देश्य सेविका, सहायिका को नई- नई गतिविधियां सिखाना , पाठ्य सामग्री का निर्माण तथा नई तकनीक से अवगत कराना है, ताकि वे इन गतिविधियों को सीख कर अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पाएं तथा आंगनबाड़ी केंद्र को और सुदृड बना सकें।

**कुल दो प्रखंड, कुल पंचायत : 10, सेविका : 103**

समाज कल्याण विभाग बिहार की अनुमति के साथ परिवर्तन संस्था नरेन्द्रपुर द्वारा कुल 2 दिवसीय सेविका एवं एक दिवसीय सहायिका प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। इस प्रशिक्षण के दौरान सिवान जिला के दो प्रखंड आंदर एवं जिरादेई की कुल 10 पंचायतों में से 103 आंगनबाड़ी केंद्र की सेविकाओं की उपस्थिति रही। इस प्रशिक्षण के दौरान सभी सेविकाओं को काफी कुछ नया सीखने को मिला जो उनके नियमित केंद्र संचालन में गति प्रदान करेगा। दोनों दिन के प्रशिक्षण का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार से है :

सेविका प्रशिक्षण के पहले दिन सभी सेविकाओं के साथ परिचय से शुरुआत की आई फिर चारों मैडम द्वारा "स्वं मंगलम (दुर्गा माँ की स्तुति इतनी शक्ति हमें देना दाता)" प्रार्थना का स्वरवाचन करवाया गया।

फिर गतिविधियों को सेविकाओं के बीच किया गया। उसके बाद नई नई कविताओं का स्वर वाचन किया गया -, दादी ने बच्चो को गिनती के माध्यम से बहुत ही सुंदर कविता सुनाई, मोटू भैया बड़ा गवैया, भालू काले बालों वाला, मै एक छोटो रोना मुझको आता नहीं, गर्मी आई लाने आम, कठपुतली। उसके बाद, "मटकू की बेस्ट दोस्त सोना" कहानी बहुत ही मजेदार तरीके से रोल प्ले के माध्यम से सुनाई गयी।

उसके बाद व्यक्तिगत स्वच्छता पर बातचीत हुई- दो बार ब्रश करना चाहिए, सप्ताह में दो बार बाल धोना चाहिए, साफ-सफाई का नियम, एक कदम स्वच्छता की ओर, शौचालय का इस्तेमाल और स्वस्छता से जुड़ी कविता सुनाई गयी - सुनो कहानी हनु की हम सबके प्यारे हनु की।

उसके बाद सेविकाओं से कुछ पहेलियाँ भी पूछी गई। कहानी को कविता की तरह भी सुनाया जा सकता है यह बतलाया गया। एवं बहुत सारे प्रश्न भी किए गए- मटकू का दोस्त कौन हुआ होगा ? इत्यादि । कहानी एक ऐसा माध्यम जिससे हम बच्चों को देश-विदेश की सैर करा सकते हैं और बहुत सारे सन्देश दे सकते हैं। अगर कहानी कल्पनिक हो तो बच्चो की रूचि और ज्यादा बढ़ जाती है। खासकर जानवरों की कहानी बच्चों को और रोमांचक लगने लगती है। स्वर और व्यंजन से शब्द बनाना,रंगों का खेल-( इस गेम में बच्चे रंग देखकर शब्द बना सकते है) और हल्का और भारी का अन्तर बताया गया तथा कर के भी दिखाया गया।

**दूसरा दिन :** कार्यशाला के दूसरे दिन प्रार्थना से कार्यक्रम शुरू हुआ। उसके के बाद सभी सेविकाओं के साथ की गयी गतिविधि का पूर्वाभ्यास करवाया गया। फिर सभी सेविकाओं से TLM बनवाया गया और स्टोरी टेलिंग कराया गया ताकि वो अपने सेन्टर पर कहानी सुना सकें। उसके बाद बाल कविता पाठ कराया गया। फिर उन्हें गुड टच और बैड टच के बारे में बताया गया और कुछ छोटी छोटी रोमांचक पहेलियाँ बूझने के लिए दी गईं जो वे बच्चों पर भी आजमा सकती हों। फिर सेविकाओ के साथ एक गेम कराया गया जिसमें सबको अलग-अलग पात्र बनना था । यह मजेदार गेम अगर बच्चों के साथ कराया जायेगा तो उन्हें बहुत पसंद आएगा ऐसी समझ बनी।

गणित से जुडी गतिविधि - इसमें सेविकाओं को बच्चों के साथ अंक और गिनती सिखाने के संयोजन बताया गया।

**उपस्थित सेविकायें**

| दिन | पंचायत | सेविकाओं की संख्या |
|---|---|---|
| 17 अक्टूबर 2024 | 10 | 96 |
| 18 अक्टूबर 2024 | 10 | 90 |

# स्वास्थ्य एवं पोषण कार्यक्रम रिपोर्ट 2024

**दिनांक –** 03, 4, 7 तथा 11 सितम्बर 2024 तक चला।
स्थान- आंगनबाड़ी केंद्र , कुल पंचायत -7

**परिवर्तन के सदस्य:** मधुबाला देवी, विवेक कुशवाहा और मिथिलेश कुमार

**उद्देश्य –** समुदाय के लोगों को नियमित खानपान में पोषण युक्त खाद्य समाग्री जो आसानी से उपलब्ध हो, साथ ही साथ संतुलत थाली के बारें में अवगत कराना।

- **स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करना**
- **दैनिक भोजन में शाक भाजी को शामिल करने हेतु पोषक वाटिका के निर्माण और लाभ की जानकारी प्रदान करना**
- **आंगनबाड़ी केंद्र एवं लाभार्थी संख्या**

**कार्यक्रम -** मनुष्य का विकास उसकी स्वस्थ्य दिनचर्या से होता है।

यह स्वस्थ्य दिनचर्या तभी होगी जब हम प्रतिदिन संतुलित भोजन करेंगे । इस सन्दर्भ में परिवर्तन द्वरा सितम्बर माह में संतुलित भोजन की जानकारी के प्रति कार्यक्षेत्र समुदाय में जागरूकता लाने हेतु 03 सितम्बर से 11 सितम्बर तक स्वास्थ्य और पोषण युक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कार्यक्षेत्र से 7 पंचायतों के आगनबाड़ी केन्द्रों पर आयोजित किया गया। संचालक कृषि - विवेक जी के द्वारा परिचय सत्र से कार्यक्रम को शुरू किया जाता और उसके बाद मेरे द्वारा पोषण के आयाम और संतुलित थाली का प्रदर्शन किया जाता था । यह किशोरियों और महिलाओं को सही पोषण के लिए जागरूक करने की मुहिम थी। इसके साथ ही साथ पोषण वाटिका से लाभ और लगाने के तरीके को बताया

गया कि कम से कम जमीन पर आप कैसे पोषण वाटिका लगा सकते हैं यह बात बहुत ही बेहतर तरीके से विवेक जी ने समझाई। उसके बाद उसी जगह पर मिथलेश जी द्वारा पोषण सम्बन्धित बिना किसी खर्च से मिलने वाली खाद्य समाग्री के बारे जानकारी दी गयी। कुपोषित बच्चा होने का कारण, उदाहरण के साथ मिथलेश जी ने बताया। वे घर पर होर्लिक्स और सेरोलेक बनाने की जानकरी भी दे रहे थे । महिलाओं ने बनाने की प्रक्रिया में बहुत रूचि दिखलाई। कार्यक्रम के दौरान आंगनबाड़ी सेंटर पर लगी पोषण वाटिका, सभी महिलाओं और किशोरियो को दिखलाई गयी और हमारा भोजन कैसा हो, उस पर चर्चा की गयी।

**कार्यक्रम का प्रभाव -**

- काफी महिलाओं ने माना कि वह खाने में हरी साग सब्जियों को कम शामिल करती हैं लेकिन जिसका आगे से वे ख्याल रखेंगी।
- जच्चा और बच्चा के ख्याल से महिलायैं खाने के प्रति सचेत हुईं।
- उन्होंने अपने घर के आस पास पोषक वाटिका निर्माण की बात कही।

हमारे द्वारा संचालित जागरूकता कार्यक्रम को बिहार सरकार के बालविकास मंत्रालय के ऑफिशियल पेज पर भी पोस्ट किया गया।

| क: | दिनांक | पंचायत | गाँव | सेविका का नाम | लाभार्थियों की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 . | 03/09/24 | नरेंद्रपुर | खेमभटकन | संगीता देवी | 40 |
| 2 . | 04/09/23 | भरोली | भरोली | प्रतिमा देवी | 25 |
| 3 . | 04/09/23 | जमापुर | बंगरा | चंदा देवी | 35 |
| 4 . | 07/09/23 | भवराजपुर | भवराजपुर | रेखा देवी | 20 |
| 5 . | 07/09/23 | बलिया | बंगरा उजैन | सुमन देवी | 30 |
| 6 . | 11/09/23 | मियांभटकन | बंथू सलोना | ललिता देवी | 15 |
| 7 . | 11/09/23 | चंद्रोली-गंगोली | बेदवलिया | बेज्नतीदेवी | 28 |

# सेविका की केस स्टोरी

**नाम – चंदा देवी, ग्राम – बंगरा, केंद्र – बंगरा, उम्र – 32 साल**

चंदा देवी का आँगनबाड़ी केंद्र बंगरा ग्राम में है। वह नियमित समय से अपने केंद्र पर आती हैं। वे बहुत एक्टिव सेविकाओ में से एक हैं। वे एक बार जो गतिविधि देख लेती हैं वह सीख लेती हैं और अपने केंद्र पर जाकर बच्चों के बीच बहुत सुन्दर तरीका से कराती हैं। उन्हें बालगीत,कविता, कहानी, बहुत दिनों तक याद रहते हैं। परिवर्तन द्वारा आयोजित सेविका प्रशिक्षण में जो गतिविधि,कविता, कहानी बताई जाती है वह उसे बहुत दिनों तक याद रखती हैं । इनके प्रयास से केंद्र हमेशा बहुत साफ-सुथरा रहता है। केंद्र पर बच्चों की उपस्थिति भी बहुत ज्यादा संख्या में रहती है। वे अपनी नौकरी बहुत जिम्मेदारी के साथ करती हैं, किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं देती हैं। वह काम सहायिका के भरोसे नहीं छोड़ती हैं और बहुत सारे काम वह खुद से ही समय से कर लेती हैं।

यहाँ सब बच्चों की अच्छी उपस्थिति चंदा जी के केंद्र पर समय से आने एवं समय से जाने के कारण होती है।

# सहायिका की केस स्टोरी

**नाम - सदरुन खातून, घर- चंदोली -गंगोली**

सदरुन खातून परिवर्तन द्वारा आयोजित सहायिका प्रशिक्षण में 2019 से भाग लेती चली आई हैं। सदरुन जी हर बार प्रशिक्षण में आती है और नई –नई कहानी का बहुत ही सुंदर कठपुतली (पपेट) बनाती हैं और अपने केंद्र के लिए लेकर चली जाती हैं।सदरुन जी हर कहानी का पपेट मेहनत और लगन से बनाती नजर आती हैं और सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं।

# बच्चों की केस स्टोरी

**मेनका कुमारी, पिता - जयनाथ गोंड, घर – गोंठी**

मेनका, दीपशिखा जी के सेंटर से आती है। मेनका बहुत ही शांत स्वभाव की है। जब वह क्लास के लिए बालघर आती है तो आते के साथ ही सभागार के पास बनी मूर्ति को छठ माई बोलती है और आते-जाते समय वह उस मूर्ति को प्रणाम भी करती है। वह प्यारी सी विलक्षण बच्ची है।

**अनामिका कुमारी, पिता का नाम - आनन्द गुप्ता, घर - गोठी**

अनामिका, बिंदु जी के सेंटर से बालघर क्लास के लिए प्रतिदिन आती है। अनामिका को किचेन सेट से खाना बनाना बहुत पसंद है। वह हर दिन एक नया आइटम बनाती है और सारे बच्चों को बहुत पसंद से खिलाती है। उसका खाना खिलाने का बहुत बेहतर तरीका है- जब किसी बच्चे को खाना खाने का मन नहीं रहता है तो अनामिका बोलती है,- “ ज्यादा नहीं थोड़ा सा खा कर तो देखो, अच्छा नहीं लगने पर खाना छोड़ देना।” यह मनमोहक लगता है।